Sem. 2, MJ-2

भूषण का काव्य-सौन्दर्य

रीतिकालीन रीतिबद्ध कवि महाकवि भूषण अपनी वीररसात्मक कविताओं और राष्ट्रीय भावना के कारण हिन्दी साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान के अधिकारी हैं। प्रसिद्ध कवि मतिराम एवं चिन्तामणि के भाई के रूप में ख्यात भूषण कवि की उपलब्ध तीन प्रमुख रचनाएँ हैं — 'शिवराजभूषण', 'शिवा बावनी' एवं 'छत्रसाल दशक'। इनमें 'शिवराज भूषण' लक्षण-निरूपक ग्रन्थ है, जिसमें एक सौ पाँच अलंकारों का निरूपण हुआ है। भूषण कवि कई राजाओं के आश्रय में रहे किन्तु इन्होंने मुख्य रूप से मराठा राजा शिवाजी और पन्ना नरेश छत्रसाल की वीरता का ही गान गाया है। कहा जाता है कि 'भूषण' उपाधि है और यह उन्हें चित्रकूट के राजकुमार रुद्रशाह ने दी थी।

जहाँ तक 'शिवराजभूषण' ग्रंथ द्वारा लक्षण-निरूपण का प्रश्न है, विद्वानों ने उनके आचार्य-कर्म की प्रशंसा नहीं की है। अलंकारों के लक्षण निरूपित करते हुए एक-दो नये अलंकार भी प्रस्तुत किए गये हैं। इन लक्षणों को भूषण ने दोहा छंद में तथा उदाहरण को कवित, सवैया, छप्पय या दोहा छंदों में प्रस्तुत किया है। कवि ने उदाहरणों के रूप में शृंगारिक रचनाएँ न प्रस्तुत करते हुए वीररसपरक राजप्रशस्ति को ही प्रस्तुत किया है। इस लक्षण-ग्रंथ के संबंध में आ० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते हैं, "भूषण के लक्षण कई स्थानों पर अस्पष्ट और भ्रामक हैं। कहीं-कहीं तो उदाहरण भी नहीं बन पड़े हैं।

महाकवि भूषण के काव्य की विशेषता उनकी रीतिबद्धता में न होकर उनकी वीररसात्मकता में है। उनके काव्य की मूल संवेदना वीर-प्रशस्ति, जातीय गौरव एवं शौर्य वर्णन है। मुगलबादशाह औरंगजेब के अत्याचारों से पीड़ित निराश हिन्दू जाति को भूषण ने शिवाजी एवं छत्रसाल की वीरता का संबल दिया। कवि ने अपने 'शिवा बावनी' में शिवाजी की युद्धवीरता, दानवीरता, दयावीरता व धर्मवीरता का वर्णन किया है। अपने 'छत्रसाल

दशक' में उन्होंने छत्रसाल की वीरता का ओजपूर्ण चित्रण किया है। मुक्तक शैली में काव्य-रचना करनेवाले भूषण ने युग के आदर्श नायकों का चरित्र प्रस्तुत किया है। शिवाजी के पराक्रम का एक चित्र द्रष्टव्य है —

"तेजतम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों म्लेच्छ वंस पर, सेर सिवराज है।"

कवि का युद्ध वर्णन बड़ा ही सजीव और स्वाभाविक है। उन्होंने शिवाजी को धर्म व संस्कृति के उन्नायक के रूप में चित्रित किया है। शिवाजी को कवि ने दानवीर और शरणागत-वत्सल के रूप में भी अंकित किया है। शिवाजी की सेना का पराक्रम तो देखते बनता है —

"तारा सों तरनि धूरि धरा में लगत जिमि,
धारा पर पारा पारावार ज्यों हलत है।"

भूषण कवि को रीतिकालीन राष्ट्रकवि के रूप में देखा जाता है। तत्कालीन राष्ट्रीयता हिन्दुओं के जातीय शौर्य और पराक्रम के वर्णन से ही संबद्ध है, क्योंकि औरंगजेब की कट्टर धार्मिक भावना ने हिन्दुओं का नायक शिवाजी को बनाया था। —

"भूषण जहान हिन्दुवान के उबारिबे को,
तुरकान मारिबे को वीर बलकत है।"

इसीलिए आ० शुक्ल ने लिखा था — "भूषण की कविता कवि-कीर्ति-सम्बंधी एक अविचल सत्य का दृष्टांत है।"

इस प्रकार ब्रजभाषा के माधुर्य को वीर रस में ढालनेवाले, ओजपूर्ण शैली में गान करनेवाले भूषण कवि ने अपनी वाणी में बिजली भर दी थी। उन्होंने अरबी-फारसी के शब्दों का उपयोग करने में संकोच नहीं किया है। प्राकृत और अपभ्रंश के शब्दों से अवश्य ही वहाँ क्लिष्टता है; किन्तु उनकी भाषा-शैली अत्यंत प्रभावोत्पादक, चित्रोपम और सरस है। — "पच्छी परछीने ऐसे परे परछीने वीर,
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।"

निस्संदेह, अपने काव्य-वैभव के साथ भूषण कवि न केवल साहित्य जगत में अपितु राष्ट्र-चेतना में भी सम्पूज्य हैं।